Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 25-03-2023, Accepted: 11-04-2023, Published: 26-04-2023
Volume 4, Issue 1, 2023, Page No. 12-13

जैनेन्द्र का उपन्यास त्यागपत्र

उषा
पीएचडी, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
जैनेन्द्र द्वारा रचित 'त्यागपत्र' उपन्यास 1937 ई. में लिखा गया। यह उपन्यास साहित्य जगत में एक क्रांति सी लाता है क्योंकि इसकी नायिका मृणाल अपने जीवन में इस भारतीय समाज के रीति–नीतियों से समझौता नहीं करती है, बल्कि अपने तरीके से जीवन जीने का फैसला करती है। जो कि तत्कालीन समाज की दृष्टि से अत्यंत ही प्रगतिशील कदम था। वह सदियों से जकड़ी भारतीय नारी की तरह परतंत्र जीवन न जीकर वैयक्तिक स्वतंत्रता की मांग करती है तथा उपन्यास मृणाल की भारतीय समाज व्यवस्था से बाहर निकलने की संघर्ष गाथा है।

मूल शब्दः उपन्यास, त्यागपत्र, मृणाल, क्रांति

मृणाल के माता–पिता की मृत्यु हो चुकी थी जब वह छोटी थी, इसलिए उसका पालन–पोषण उसके भाई–भाभी ने किया। मृणाल को बचपन से ही उसके परिवार द्वारा परंपरागत आर्य नारी के पिंजरे में कैद करने की कोशिश शुरू हो जाती है। मृणाल अपने स्कूल जीवन के समय तक बहुत चंचला थी उसकी हार्दिक आकांक्षा चिड़िया बनाकर स्वच्छंद विचरण करने की थी जो इस उपन्यास में दिखती है। ''देख चिड़िया कितनी ऊंची उड़ जाती है x x x x xx क्यों रे कैसी मौज है।[1] मृणाल भी चिड़िया के जीवन जैसी स्वतंत्रता के आनंद को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करती है तथा उसका यह संघर्ष तब शुरू होता है। जब वह शील के भाई के साथ प्रेम करती है अपने इसी स्वच्छंद प्रेम के कारण अपनी भाभी द्वारा डण्डे से मार खाने के बाद अपने प्रेम के कड़वे घूंट को पी जाती है। उसका प्रेम सदा के लिए वहीं खत्म हो जाता है या यूं कहें कि सामाजिक प्रताड़ना और नैतिक मान्यताओं का भय उसे दबा देता है। क्योंकि इस समाज में जहाँ पुरुश के लिए प्रेम स्वच्छन्द और खुले रूप में सामाजिक मान्यता पाता है वहीं स्त्री के लिए नैतिकता की दुहाई दी जाती है। और कोई स्त्री समाज की इन नैतिकता के बंधन को तोड़ देती है तो उसे मानसिक, नैतिक और सामाजिक स्तर पर प्रताड़ित किया जताा है। कहीं न कहीं इसी सामाजिक रूढ़ि से प्रभावित मृणाल का परिवार भी दिखाई पड़ता है। जिस भाई ने मृणाल को बचपन से किशोरावस्था के पहले तक इतना प्यार दिया उसकी सारी इच्छाएं पूरी की परन्तु उन्होंने उसका विवाह उसकी इच्छा के विरूद्ध एक ऐसे व्यक्ति से किया जो की उम्र में भी बड़ा तथा शादीशुदा था और जब मृणाल अपने पति के घर वापस न जाने की बात करती है तो क्यों उस पर दबाव बनाकर उसे पति के घर भेज दिया।

इन सारे प्रश्नों का उत्तर सामाजिक परंपराओं, नैतिक बन्धन और रूढ़ियों के प्रति आग्रह में निहित है। अपने अनमेल विवाह के बाद भी मृणाल अपने पति के प्रति पूर्णतः समर्पित होना चाहती है और समर्पण में छल नहीं चल सकता यह सब सोचकर मृणाल शील के भाई के साथ रहे अपने पूर्व के सम्बन्ध के बारे में अपने पति को बताती है लेकिन उसका पति उसको 'कुलटा' कहकर प्रताड़ित करना शुरू कर देता है। इन सभीघटनाओं से मृणाल के पति की रूढ़िवादिता और संकीर्णता भावना सामन आती है। जो कि भारतीय समाज के सभी पुरुषों में देखी जा सकती है। यह हमारे समाज की विडंबना नहीं तो और क्या है। एक पुरुष द्वारा विवाह से पूर्व प्रेम संबंध समाज के लिए आम बात है परन्तु एक स्त्री के लिए यह बता 'कलंक' का रूप ले लेती है। इसी परंपरा को मृणाल ने तोड़ा जिसका परिणाम उसे परित्यक्तता के रूप में भुगतना पड़ा। मृणाल अपने पति के र्दुव्यवहार से जल्दी ही समझ जाती है कि वह पति के लिए एक वस्तु से ज्यादा कुछ नहीं है एक जगह वह प्रमोद से कहती है ''अपने ''फूफा की चीज को छीनने वाले तुम होते कौन हो?''[2]

वास्तविक रूप में हमारे भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री को आज भी रूढ़िवादी लोग चीज ही समझते हैं। हिंदू धर्म व्यवस्था में तो तलाक भी आसानी से नहीं लिया जा सकता है चाहे स्त्री का जीवन भले नरक ही क्यों न बन जाए लेकिन तलाक से विवाह को तोड़ा नहीं जा सकता है ''विवाह भावुकता का प्रश्न नहीं व्यवस्था का प्रश्न है x x x x जो बंधी कि खुले नहीं सकती।[3]

विवाह एक ऐसा कठोर सामाजिक रूढ़ि बंधन है कि उसे तोड़ना स्त्री के लिए आसान नहीं होता। यह सिर्फ दो व्यक्तियों के बीच का बन्धन नहीं, बल्कि परिवार और समाज के बीच का भी बन्धन है। प्रेमचंद जी ने 'गोदान' उपन्यास में स्वीकार किया है। ''विवाह को मैं सामाजिक समझौता समझता हूँ उसे तोड़ने का अधिकार न पुरुष को है न स्त्री को।[4] मृणाल इसी विवाह संस्था को चुनौती देती है जिसमें सामान्यतः स्त्री का महत्व एक निर्जीव वस्तु से ज्यादा नहीं होता है। स्त्री को दासी बना दिया जाता है सबसे बड़ी बात तो यह होती है उस स्त्री को ही पता नहीं होता की उसका शोषण हो रहा है। मृणाल का इस व्यवस्था से विद्रोह करने का अपना तरीका है। मृणाल न तो स्वयं इस व्यवस्था में रहना चाहती है और न ही इसको तोड़ना चाहती है हालांकि उसकी तटस्थता भी एक तरीके से इस समाज व्यवस्था को तोड़ती है मृणाल समाज व्यवस्था के सम्बन्ध में अपने विचार रखती है ''मैं समाज को तोड़ना–फोड़ना नहीं चाहती हूँ x x x x x x मंगलाकांक्षा में खुद ही टूटती रहूँ।[5]

जब मृणाल का पति उसे शहर के बाहर एक कोठरी में छोड़ आता है तो वह यह जान जाती है कि उसका पति उसे चाहता नहीं है। इसीलिए वह अपना भारत उस पर डाले रखने की बजाय खुद ही उससे दूर हो जाती है तथा कोयले वले के दया भाव से उसके साथ रहने लग जाती है जबकि वह जानती थी कि कोयले वाला उसके सौंदर्य पर मोहित है जिस दिन उसका मोह भर जाएगा वह उससे दूर चल जाएगा यहाँ पर हम एक बार फिर समाज की पुरुषवादी मानसिकता देख सकते हैं जिसमें पुरुष नारी को उपभोग की वस्तु से अधिक कुछ मानने को तैयार नहीं दीखता।

त्यागपत्र की मृणाल एक आधुनिक प्रगतिशील नारी पात्र है वह समाज की तथा कथित यौन शुचिता को महतव नहीं देती है उसके अनुसार मनुष्य की पवित्रता व अपवित्रता का सम्बन्ध मन से होता है न कि देह से यही कारण था कि वह कोयले वाले के साथ बड़ी सहजता से यौन सम्बन्ध बना लेती है मृणाल अपने पूरे जीवन काल में समाज व्यवस्था से लड़ती रही। जिसमें उसके साथ कोई भी खड़ा नहीं हुआ प्रमोद अपनी बुआ की सहातया को करना चाहता था, किन्तु वह भी इस समाज व्यवस्था के डर से खुलकर उनकी सहायता न कर पाया। मृणाल अपने जीवन के शुरूआत में जिस स्वतंत्र वाले छल रहित जीवन की कामना करती है उसको अपने जीवन की संध्या बेला में समाज के त्यागे हुए लोगों के साथ रहकर कुछ हर तक प्राप्त कर लेती है इसके सम्बन्ध में वह कहती है। ''यहाँ छल असम्भव है जो छल कि शिष्ट समाज के लिए जरूरी ही है x x x x x x पीतल से परहेज नहीं है।'' इस उपन्यास में मृणाल जैसे चरित्र इसे काल की सीमा में न बंधकर इसे समय के साथ और अधिक प्रासंगिक बनते हैं।

निष्कर्ष

मृणाल उस भारतीय समाज व्यवस्था के साथ लड़ाई में विजयी होती है जिसमें नारी को केवल भोग की वस्तु समझ जाता है। मृणाल इस समाज की झूठी रीति–नीति को तोड़ती है जिसमें नारी को पतिव्रता का धर्म निभाने को बाध्य किया जाता है। मृणाल एक ऐसी चिड़िया है जो इस समाज व्यवस्था के पिंजरे में कैद न होती और स्वच्छंद आकाश में विचरण करती है।

संदर्भ सूची

1. त्यागपत्र – जैनेन्द्र (1937 ई.), प्रकाशन–भारतीय ज्ञानपीठ, पृ. 12 2. त्याग पत्र, पृ. 25
2. वही, पृ. 25
3. गोदान (1935–36 ई.), प्रेमचंद, प्रकाशन, ग्रंथ लोक, पृ. 63
4. त्याग पत्र, पृ. 64
5. वही, पृ. 81